9. व्यक्तित्व

(PERSONALITIES)

9.1. बसव जयंती

(Basava Jayanti)

सुर्खियों में क्यों?

- कर्नाटक में बसवेश्वर (बसव) का 884वां जन्मदिवस बसवन्ना जयंती या बसव जयंती के रूप में मनाया गया। बसवेश्वर 12वीं सदी के सामाजिक सुधारक थे।

बसवेश्वर के बारे में

- बसवेश्वर को **लिंगायतवाद या लिंगायत संप्रदाय या वीरशैववाद** का संस्थापक माना जाता है।
- ये दलितों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध थे। इन्होंने ब्राह्मणवादी वैदिक परंपरा में व्याप्त हो चुकी बुराईयों का प्रबल विरोध किया।
- इन्होंने अपने व्यावहारिक अनुभवों को साहित्य की एक विशिष्ट विधा में प्रस्तुत किया जिसे **'वचन (कविता)'** कहा जाता है। वचन (कविता) आंदोलन का मुख्य उद्देश्य सभी के कल्याण को सुनिश्चित करना था ।
- इन्होंने ***'कल्याण राज्य'*** **(वेलफेयर स्टेट)** की स्थापना की घोषणा की।
- इन्होंने **"स्थावर"** और **"जंगम"** नामक दो महत्वपूर्ण और अभिनव अवधारणाएं प्रतिपादित कीं। इनका अर्थ क्रमश: "स्थिर" और "गतिशील" है। ये अवधारणाएं बसवन्ना की क्रांतिकारी विचारधारा की मुख्य आधार हैं।

9.2. संत त्यागराज

(Saint Tyagraja)

सुर्खियों में क्यों?

- हाल ही में संत त्यागराज की 250वीं जयंती मनाई गई।

संत त्यागराज के बारे में

- संत त्यागराज **'कर्नाटक त्रिमूर्ति'** के प्रमुख संगीतकारों में से एक हैं। इस त्रिमूर्ति में **संत त्यागराज** के साथ ही **मुत्तुस्वामी दीक्षितार** और **श्यामा शास्त्री** भी शामिल हैं।
- संत त्यागराज का जन्म तमिलनाडु के तंजावुर जिले में हुआ था।
- रामायण के प्रभाव से वह भगवान राम के प्रख्यात भक्त बन गए। इन्होंने अपने जीवन में लगभग 24000 गीतों को भगवान राम को समर्पित किया।
- तिरुवारूर में प्रत्येक वर्ष जनवरी और फरवरी माह के बीच त्यागराज के सम्मान में एक संगीत उत्सव 'त्यागराज आराधना' आयोजित किया जाता है।

संबंधित तथ्य

- लिंगायत स्वयं को हिंदूओं से पृथक धार्मिक समूह के रूप में वर्गीकृत करवाना चाहते हैं।
- हालांकि लिंगायत भगवान शिव की पूजा करते हैं, परन्तु उनका मानना है कि "इष्ट लिंग" (व्यक्तिगत देवता) की अवधारणा और बसवेश्वर द्वारा निर्धारित आचार-व्यवहार के नियमों को हिंदू जीवन शैली के समान नहीं माना जा सकता है।
- राज्य की जनसंख्या की 10-17% जनसंख्या लिंगायत है और इन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग श्रेणी में सूचीबद्ध किया गया है।

9.3. राजा राम मोहन राय

(Raja Ram Mohan Roy)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में राजा राम मोहन राय की 245वीं जयंती मनाई गई।

राजा राम मोहन राय के बारे में

- 19वीं शताब्दी में भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण की पृष्ठभूमि में राजा राम मोहन राय की महत्वपूर्ण भूमिका है।
- इन्हें **"आधुनिक भारत के निर्माता", "आधुनिक भारत के जनक"** और **"बंगाल पुनर्जागरण के जनक"** के रूप में भी जाना जाता है।
- मुगल बादशाह अकबर शाह द्वितीय ने उन्हें **"राजा"** की उपाधि प्रदान की थी।
- इन्होंने **विधवा पुनर्विवाह** के समर्थन में तथा **सती प्रथा एवं बाल विवाह जैसी कुरीतियों** के खिलाफ अभियान चलाया।
- इन्होंने अगस्त 1828 में ब्रह्म सभा की स्थापना की। ब्रह्म सभा को बाद में ब्रह्म समाज के रूप में जाना जाने लगा। ब्रह्म समाज 1814 में स्थापित आत्मीय सभा का ही विकसित रूप था।
- ब्रह्मसमाज ने **एक ईश्वर की उपासना, भाईचारे और एक दूसरे पर निर्भरता** पर बल दिया।
- वे भारतीय संस्कृति में पश्चिमी समाज के आदर्शों की अच्छाईयों का समावेश करना चाहते थे।
- इन्होंने 1822 में कलकत्ता में **हिंदू कॉलेज** की स्थापना की।
- इन्होंने **संवाद कौमुदी और मिरात-उल-अखबार** जैसे स्तरीय पत्रों का विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन किया।

9.4 श्री रामानुजाचार्य

(Sri Ramanujacharya)

सुर्ख़ियों में क्यों ?

1 जून 2017 को श्रीरंगम और कांचीपुरम में श्री रामानुजाचार्य की 1000वीं जयंती मनाई गई।

वेदांत

हिन्दू दर्शन की वेदांत शाखा वेदांत (वेदों के अंत) या उपनिषदों पर आधारित है।
वेदांत दर्शन की अन्य शाखाएं (विशिष्टाद्वैत के अतिरिक्त) निम्नलिखित हैं:

- **द्वैत**: इसके मुख्य प्रतिपादक **मध्वाचार्य** हैं। यह एक **द्वैतवादी** सम्प्रदाय है जिसके अनुसार सत्ता (सृष्टि) दो भागों, स्वतंत्र (स्वतंत्र प्राणी) और परतंत्र (आश्रित प्राणी) में विभाजित है।
- **भेदाभेद या द्वैताद्वैत**: इसके संस्थापक **निम्बार्क** हैं। यह **द्वैताद्वैतवाद** में विश्वास करता है अर्थात् सर्वोच्च सत्ता स्वयं को विश्व की आत्माओं में रूपांतरित करती है। इस प्रकार, आत्मा सर्वोच्च सत्ता से भिन्न है और बिना समर्थन के स्वतंत्र रूप से अस्तित्व बनाए नहीं रख सकती।
- **शुद्धाद्वैत**: इसके संस्थापक **वल्लभ** हैं। यह **शुद्धाद्वैतवाद** पर विश्वास करता है अर्थात् ईश्वर स्वयं में शुद्ध है।
- **अद्वैत**: इसके संस्थापक **आदि शंकराचार्य** हैं। यह **अद्वैतवाद** अर्थात् व्यक्तिगत आत्मा और सर्वोच्च ईश्वर के एकत्व के सिद्धांत पर विश्वास करता है।

श्री रामानुजाचार्य के बारे में

- श्री रामानुजाचार्य एक **हिंदू वैष्णव धर्मशास्त्री** और दार्शनिक थे जो हिंदू धर्म में नयापन लाए और उसे पुनर्जीवन दिया।
- उनका जन्म तमिलनाडु के श्री पेरुंबुदुर गांव में एक तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ।
- उन्होंने **विशिष्टाद्वैतवाद** के नाम से प्रचलित दर्शन की शिक्षा दी।
- विशिष्टाद्वैत को यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि यह दर्शन विशेष या गुणों के साथ-साथ अद्वैत या ईश्वर के एकत्व की बात करता है। इसलिए, यह सशर्त अद्वैतवाद है।

- **विशिष्टाद्वैत प्रणाली** एक प्राचीन मत है जिसकी व्याख्या मूलतः **बोधायन द्वारा 400 ई. पू. में** की गई थी।
- श्री रामानुजाचार्य ने संस्कृत में कुल 9 दार्शनिक ग्रंथ लिखे, जिन्हें **नवग्रन्थ** कहा जाता है। उनमें से कुछ हैं: **वेदांत संग्रह (वेदों पर टीका), श्री भाष्य (ब्रह्मसूत्र पर टीका), भगवद्गीता भाष्य (भगवद्गीता पर टीका)।**
- रामानुज ने **भक्ति** के लिए एक बौद्धिक आधार प्रदान किया।

भक्ति आंदोलन

- भक्ति आंदोलन मध्यकाल के दौरान हुए धार्मिक आंदोलन को संदर्भित करता है जिसमें ईश्वर के प्रति एकचित्त समर्पण पर बल दिया गया था।
- इसका उद्भव 7वीं से 12वीं सदी के बीच दक्षिण भारत में हुआ। इसके पश्चात् यह उत्तर की ओर बढ़ा।
- इसने अलवार और नयनार, वैष्णव और शैव कवियों की कविताओं के माध्यम से अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त की।
- इसने अनुष्ठानों, समारोहों और अंधविश्वासों की निंदा की।
- इसने धार्मिक मामलों में निर्णय लेते समय ग्रहणशीलता अपनाने की शिक्षा दी। इसने जातिगत भेदभाव को चुनौती दी।
- कबीर, गुरु नानक, मीराबाई, सूरदास और तुलसी दास, चैतन्य इत्यादि भक्ति आंदोलन के महान व्यक्तित्व हैं।

भक्ति समर्थकों के प्रसिद्ध साहित्यिक कार्य-

अलवार: अलवार (संतों की कुल संख्या 12) विष्णु के प्रति समर्पित थे। अलवार रचनाओं के प्रमुख संकलनों में से एक **नालयिर दिव्यप्रबन्धम** (चार हजार पवित्र रचनाएँ) था। **इसे तमिल वेद के रूप में भी वर्णित किया गया है।**

नयनार: ये 63 संत थे जो शिव के प्रति समर्पित थे। इनकी कविताओं का संकलन (तमिल साहित्य) 12 संस्करणों में है जिसे **तिरुमुराई** के नाम से जाना जाता है। प्रथम सात संस्करणों में अप्पार, संबंदर और सुंदर की रचनाएँ **तेवरम** के नाम से संकलित हैं।

कबीरदास- यह 15वीं सदी के कवि हैं जिनके लेखन का भक्ति आंदोलनों पर प्रभाव पड़ा। इनके लिखे छंद गुरु ग्रंथ साहिब में भी पाए जाते हैं। इनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ **कबीर बीजक, साखी ग्रंथ, कबीर ग्रंथावली और अनुराग सागर** में संकलित हैं।

नानक- अन्य धार्मिक कवियों जैसे बाबा फरीद, रविदास (रैदास) एवं कबीर के साथ-साथ नानक द्वारा रचे गए भजनों को गुरु अर्जुन देव द्वारा **आदि ग्रन्थ साहिब** में संकलित किया गया था।

मीराबाई: इन्हें श्री कृष्ण की प्रशंसा में लिखी गईं अपनी कविताओं और भजनों के लिए जाना जाता है।

तुलसीदास: इनकी प्रसिद्ध रचनाओं में **श्रीरामचरितमानस, विनय पत्रिका** और **हनुमान चालीसा आदि** सम्मिलित हैं।

चैतन्य महाप्रभु: इन्होंने संस्कृत में शिक्षाष्टकम् (आठ भक्ति प्रार्थनाएं) की रचना की।

9.5. बाबा फरीद

(Baba Farid)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- सूफी संत बाबा शेख़ फरीद जी की स्मृति में फरीदकोट में पांच दिवसीय पर्व मनाया गया।

बाबा फरीद कौन थे?

- चिश्ती सूफी संत **फरीद-उद-दीन गंज-ए-शकर** बाबा फरीद के नाम से जाने जाते है।
- **बाबा फरीद ने पंजाबी भाषा में छंदों की रचना की थी, जिन्हें बाद में गुरु ग्रन्थ साहिब में सम्मिलित किया गया।**

सूफी आंदोलन के संबंध में

- सूफिज्म (सूफीवाद) 19वीं सदी में अस्तित्व में आया एक अंग्रेजी शब्द है। इस्लामिक साहित्यों में सूफीवाद के लिए "**तसव्वुफ़**" शब्द प्रयोग किया गया है। कुछ विद्वानों का विश्वास है कि यह शब्द **"सूफ"** से निकला है, जिसका अर्थ **ऊन** होता है, जिसे सूफी संतों द्वारा पहने जाने वाले खुरदरे ऊनी वस्त्रों से संदर्भित किया जाता है। अन्य विद्वानों का विश्वास है कि यह **सफा** से निकला है, जिसका अर्थ **शुद्धता** होता है।
- सन्यास और रहस्यवाद की ओर अग्रसर होने वाले धार्मिक विचारधारा के लोगों के समूह को सूफी कहा जाता था। उन्होंने ईश्वर की गहन भक्ति और प्रेम के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति पर बल दिया। सूफी संतों को **फकीर या दरवेश** के रूप में भी जाना जाता था।
- भारत में सूफीवाद का प्रसार **10वीं से 14वीं सदी ई. के मध्य हुआ।** 11वीं सदी तक यह कुरान से सम्बंधित अध्ययनों और सूफी प्रथाओं पर संकलित साहित्य के साथ सुविकसित आन्दोलन के रूप में उभरा।
- सूफी समुदाय **खानकाह** के रूप में जाना जाता था, जो एक **शेख़ (पीर या मुर्शिद)** द्वारा नियंत्रित होता था। 12वीं सदी में विश्व के विभिन्न भागों में सूफी **सिलसिले** प्रकट होने लगे थे।
- जब एक शेख़ की मृत्यु होती थी तो उनका **मकबरा (दरगाह)** उनके अनुयायियों हेतु भक्ति का केंद्र बन जाता था। इसने सूफियों की आध्यात्मिक अनुग्रह **(बरकत)** की खोज हेतु **जियारत (तीर्थाटन)** को प्रोत्साहित किया।
- तत्कालीन भारत में प्रचलित प्रमुख सूफी सम्प्रदाय (सिलसिले) चिश्ती, सुहरावर्दी, नक्शबंदी तथा कादिरी थे।
- **चिश्ती सिलसिला**
  - इसकी स्थापना **ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती** द्वारा की गई थी, **जिनकी दरगाह अजमेर में स्थित है।**
  - **आत्मसंयम** चिश्ती सिलसिले की मुख्य विशेषता थी। उन्होंने सांसारिक प्रलोभनों से स्वयं को पृथक रखा। चिश्ती संत जन-सामान्य की भाषा में वार्तालाप करते थे।
  - दैवीय परमानंद की प्राप्ति हेतु रहस्यवादी मन्त्रों सहित संगीत एवं नृत्य का संगीतकारों या कव्वालों द्वारा सम्पादन किया जाता था।
  - अमीर खुसरो तथा मलिक मुहम्मद जायसी जैसे कवियों ने सूफी सिद्धांतों की प्रशंसा में कविताएँ लिखीं।
  - कुछ प्रमुख चिश्ती सूफी संतों (अपनी दरगाह सहित) में **ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (दिल्ली), शेख़ निजामुद्दीन औलिया (दिल्ली), तथा शेख़ नसीरूद्दीन चिराग-ए-दिल्ली (दिल्ली)** हैं।
  - कुतुबमीनार का निर्माण सुल्तान इल्तुतमिश ने करवाया था, जो ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को समर्पित है।
- **सुहरावर्दी सिलसिला**
  - इस सिलसिले के संस्थापक शेख़ शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी थे। हालाँकि भारत में इसका प्रचार शेख़ बहाउद्दीन जकारिया ने किया था।
  - चिश्ती संतों के विपरीत सुहरावर्दी सम्पन्न जीवन व्यतीत करते थे और इन्होनें दिल्ली सल्तनत के अधीन अनेक महत्वपूर्ण पदों को धारण किया था।
- **कादिरी सिलसिला**
  - इसकी स्थापना शेख़ नयामतुल्लाह कादिरी द्वारा की गई थी। शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र **दाराशिकोह** इस सिलसिले के प्रमुख अनुयायियों में से एक था।
- **नक्शबंदी सिलसिला**
  - यह सिलसिला मुगल शासनकाल में प्रसिद्ध हुआ। शेख़ अहमद सरहिंदी जो स्वयं को "मुजेद्दिद अली सफ्फानी" (सहस्राब्दी के सुधारक) कहते थे, इस सिलसिले के प्रमुख प्रवर्तकों में से एक थे।

9.6. सरदार वल्लभभाई पटेल

(Sardar Vallabhbhai Patel)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- 31 अक्टूबर को **सरदार वल्लभभाई पटेल** की जयंती के अवसर को **राष्ट्रीय एकता दिवस** के रूप में मनाया गया। इस दिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में 2014 से मनाया जा रहा है।

सरदार वल्लभभाई पटेल

- सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- वह गांधीजी की विचारधारा से प्रभावित थे तथा 1917 में गांधीजी से मिलने के पश्चात स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित हुए थे।
- 1918 में गुजरात में बड़े पैमाने पर "कर की न अदायगी आंदोलन" का नेतृत्व करने के बाद उन्हें "सरदार" की उपाधि मिली। इस आंदोलन ने ब्रिटिश अधिकारियों को किसानों की जब्त की गयी जमीनें वापस करने पर विवश किया।
- **नागपुर झंडा सत्याग्रह-** 1923 में जब गांधी जी जेल में थे, तब पटेल को कांग्रेस के सदस्यों ने नागपुर में भारतीय ध्वज फहराने पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून के विरुद्ध सत्याग्रह का नेतृत्व करने के लिए कहा था।
- **बोरसद दंडात्मक कर सत्याग्रह** - यह बंदोबस्त पुनरीक्षण अधिकारियों द्वारा लोगों पर लगाए जाने वाले भू-राजस्व में अनुचित वृद्धि के विरोध में गांधीजी के नेतृत्व में किया गया सत्याग्रह था। सरदार पटेल ने भी इस सत्याग्रह में भाग लिया।
- उन्होंने 1928 में 'कर-वृद्धि' के विरुद्ध बारदोली सत्याग्रह का भी नेतृत्व किया।
- स्वतंत्रता के बाद, **इन्होंने भारतीय संघ में 500 से अधिक रियासतों के एकीकरण हेतु महत्वपूर्ण कार्य किया।**
- भारत के एकीकरण हेतु उनके अटल संकल्प के लिए उन्हें "लौह पुरुष" भी कहा जाता है।

9.7. बिरसा मुंडा

(Birsa Munda)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- बिरसा मुंडा के जन्म की वर्षगाँठ को बिरसा मुंडा जयंती के रूप में मनाया जाता है।

बिरसा मुंडा के बारे में (जो धरती अब्बा के नाम से भी लोकप्रिय हैं)

- इनका जन्म 15 नवंबर 1875 को हुआ था। वह **छोटानागपुर पठार की मुंडा जनजाति** से थे।
- बिरसा मुंडा एक युवा स्वतंत्रता सेनानी और आदिवासी नेता थे जिन्होंने मिलनेरिअन (सहस्राब्दी) आंदोलन का नेतृत्व किया था। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में उनकी विरोध की भावना को भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध का एक सशक्त प्रतीक माना जाता है।
- वह अपना धर्म परिवर्तित कर ईसाई बन गये लेकिन आदिवासियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के मिशनरियों के प्रयासों का अहसास होने के पश्चात बिरसा ने **'बिरसाइट (बिरसा धर्म)'** नामक संप्रदाय शुरू किया। **लोगों द्वारा उसे ईश्वर का दर्जा दे दिया गया।**
- उरांव और मुंडा समुदाय के सदस्यों ने अंग्रेजों की धर्म परिवर्तन संबंधी गतिविधियों को चुनौती देने के लिए बिरसाइट संप्रदाय से जुड़ना आरंभ कर दिया।
- उसने आदिवासी समुदाय के अन्दर व्याप्त अंधविश्वास को समाप्त करने, पशु बलि को रोकने तथा मद्यपान का त्याग करने का भी प्रयास किया।
- अल्पायु होने के बावजूद, बिरसा को अंग्रेजों द्वारा आरोपित भू-बंदोबस्त प्रणाली के विरुद्ध जनजातीय समुदाय को एकजूट करने के लिए जाना जाता है। इसने अंग्रेजों को **उसकी मृत्यु के आठ वर्ष पश्चात आदिवासियों के भूमि अधिकारों की रक्षा हेतु छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट** लागू करने के लिए विवश किया।
- वह एकमात्र आदिवासी नेता हैं जिनका चित्र संसद के केंद्रीय कक्ष में लगाया गया हैं।

9.8 अनसूया साराभाई

(Anasuya Sarabhai)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- गूगल ने अनसूया साराभाई की 132वीं वर्षगांठ को एक डूडल बनाकर मनाया।

अनसूया साराभाई के संदर्भ में

- इन्हें भारत की प्रथम महिला यूनियन लीडर के रूप में जाना जाता है। 1920 में इन्होंने भारत में कपड़ा कामगारों की सबसे पुरानी यूनियन अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (मजदूर महाजन संघ) की स्थापना की।
- इनका जन्म अहमदाबाद के एक संपन्न परिवार में हुआ था। ये छोटी उम्र में ही अनाथ हो गई थीं और मात्र 12 वर्ष की आयु में इन्हें विवाह करने को विवश किया गया। हालांकि, वे भाग निकली और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अध्ययन करने चली गई।
- लंदन में, वह फेबियन सोसाइटी और समानता सम्बन्धी नए विचारों से प्रभावित हुई तथा महिलाओं के लिए मताधिकार की मांग करने वाले आंदोलन में शामिल हुईं।
- भारत वापस आने पर, ये मिल श्रमिकों की 36 घंटे की शिफ्ट की दुर्दशापूर्ण कार्यदशाओं के विरोध से जुड़ गई। 1914 में, इन्होंने अधिक मजदूरी के लिए बुनकरों की प्रथम हड़ताल आयोजित करने में सहायता की।
- वह 1972 में सेल्फ- एम्प्लॉइड वीमन्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के गठन में भी शामिल थी।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित अन्य प्रमुख महिलाएं

- **रानी लक्ष्मी बाई -** वह भारत की स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध (1857) के अग्रणी योद्धाओं में से एक थी। उन्होंने "व्यपगत के सिद्धांत" का विरोध किया और झांसी पर अपना दावा छोड़ने से मना कर दिया।
- **बेगम हजरत महल -** इन्हें अवध की बेगम के नाम से भी जाना जाता है, इन्होंने 1857 के विद्रोह में एक प्रमुख भूमिका निभाई।
- **सावित्रीबाई फुले -** ब्रिटिश शासनकाल के दौरान महिलाओं के अधिकारों में सुधार लाने हेतु इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने 1848 में पुणे के भिडेवाडी में अपने पति के सहयोग से प्रथम महिला स्कूल की स्थापना की। महिलाओं के अधिकारों के अतिरिक्त, इन्होंने जाति आधारित भेदभाव के उन्मूलन के पक्ष में भी कार्य किया।
- **सरोजिनी नायडू -** वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष और साथ ही किसी भारतीय राज्य (संयुक्त प्रांत) की प्रथम महिला राज्यपाल भी थी। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें उनके साहित्यिक कार्यों के लिए भी जाना जाता है।
- **अरुणा आसफ अली -** इन्हें पूर्वनिर्धारित समय पर बॉम्बे के ग्वालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज फहरा कर भारत छोड़ो आंदोलन का आरंभ करने के लिए याद किया जाता है। ये **ग्रैंड ओल्ड लेडी ऑफ़ इंडिपेंडेंस** के रूप में लोकप्रिय हैं।
- **मैडम भीकाजी कामा -** इन्हें 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट में स्वयं द्वारा डिज़ाइन किए गए प्रथम भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को फहराने का विशेष श्रेय प्राप्त है। इन्हें **"भारतीय क्रांति की जननी"** के रूप में जाना जाता है। इन्होंने अपने क्रांतिकारी विचारों के प्रसार के लिए "बन्देमातरम्" नामक पत्रिका भी शुरू की तथा दादाभाई नौरोजी के निजी सचिव के रूप में भी कार्य किया।
- **एनी बेसेंट -** इन्होंने 1916 में होम रूल लीग की स्थापना की और वह बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापकों में से एक हैं। इन्होंने न्यू इंडिया और कॉमनवील समाचार पत्र भी शुरू किए थे तथा अपने भाषणों और लेखनी के माध्यम से लोगों के मध्य जबरदस्त उत्साह पैदा किया।
- **उषा मेहता -** ये भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे कम उम्र की स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थीं। इन्होंने 8 वर्ष की अल्पायु में "साइमन गो बैक" प्रदर्शन में भाग लिया। इन्हें गुप्त कांग्रेस रेडियो संचालित करने का भी श्रेय दिया जाता है तथा ये भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत रेडियो की संचालिका थीं।